A27. विकल्प प्रथम संस -2006_c

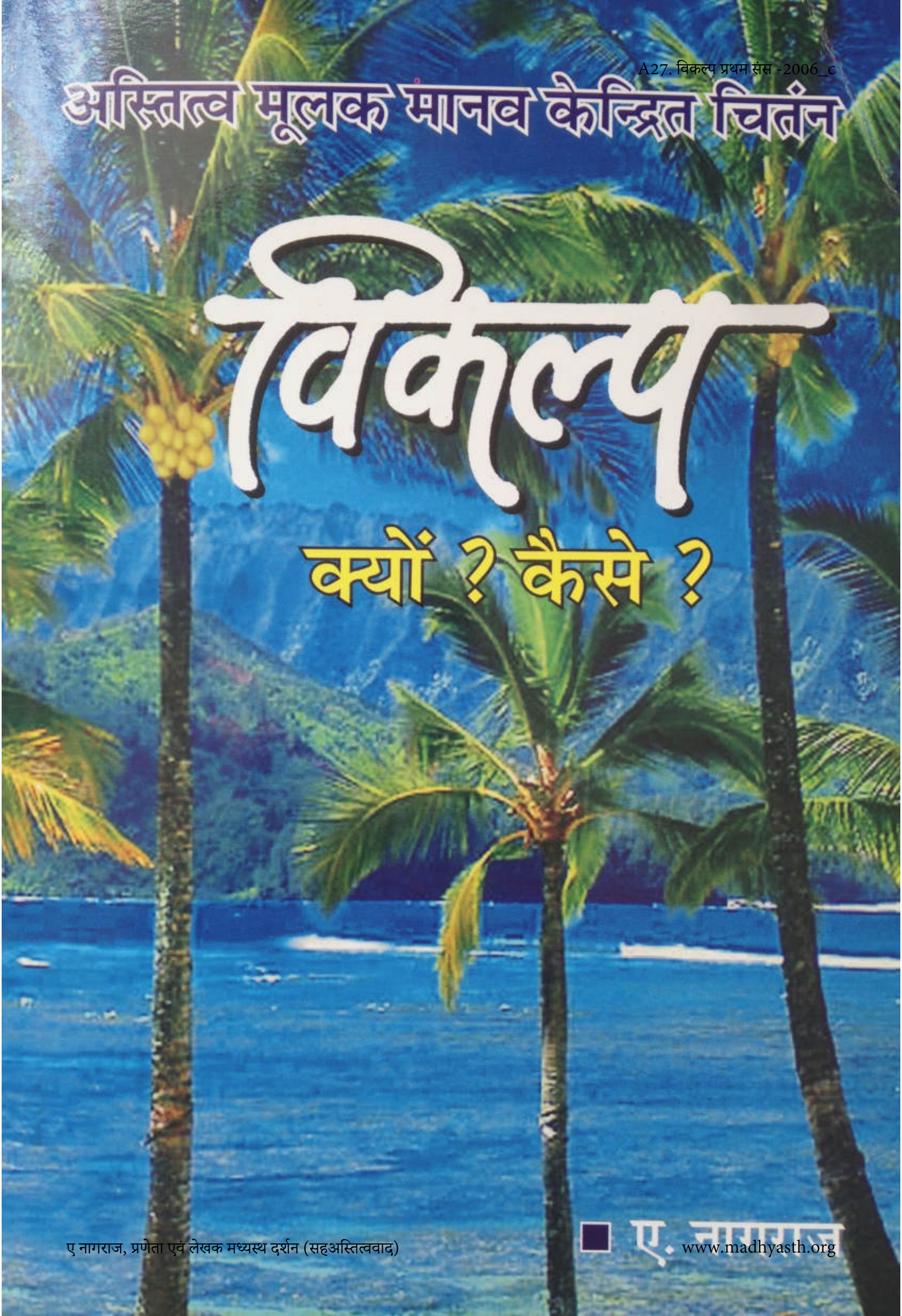

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

www.madhyasth.org

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद

पर आधारित

विकल्प

क्यों ? कैसे?

ए. नागराज

मानव बंधुओं

अभी तक विगत से चली आयी ईश्वरवाद और भौतिकवाद की नजरिया से मानव का अध्ययन सम्पन्न नहीं हुआ। यह सूचना देते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ कि विकल्प अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन है। मध्यस्थ दर्शन-सह-अस्तित्व में, से, के लिए मानव का अध्ययन संभव हो गया है।

इस विकल्प में आपको अवगत कराने का प्रयत्न है कि मानव का अध्ययन मानव चेतना सम्मत मूल्य शिक्षा विधि से सर्वसुलभ होने का सभी निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण सम्पन्न हो चुका है। ऐसे केन्द्र में से एक **अभ्युदय संस्थान** छत्तीसगढ़ की सीमा में कार्यरत है।

इस सूचना में यह भी प्रस्तुत कर रहे हैं कि सर्व मानव समझदार न्याय पूर्वक जी सकता है, हर समझदार परिवार समाधान-समृद्धि पूर्वक जी सकता है। यह शिक्षा विधि से सर्व सुलभ होने की व्यवस्था है। आप अपने सद्विवेक से प्रस्तुत सूचनाओं से अवगत होंगे। यही विश्वास है।

आपका

ए. नागराज, प्रणेता

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद

दिव्य पथ संस्थान

भजनाश्रम, अमरकंटक,

जिला-शहडोल (म.प्र.)

विकल्प (जीवन विद्या)

1. अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।

   विकल्प के रूप में प्राप्त अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।

   मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता, (जानने वाला), सह-अस्तित्वरूपी अस्तित्व जानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान व मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित प्रमाणित होने की विधि अध्ययनगम्य हो चुकी है।

   अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए.नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

3. वेदान्त के अनुसार ज्ञान ''ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या'' जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पत्ति बताई गई।

उपासना ... देवी देवताओं के संदर्भ में

कर्म :- स्वर्ग मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)

मनुधर्म शास्त्र में :- चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है ।

कर्म काण्डों में :- गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्म काण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है ।

इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

4. सत्यम ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है ? तत्कालीन वेदज्ञों एवं विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे :-

समाधि में अज्ञात के ज्ञात होने का आश्वासन मिला । शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य सम्पन्न करने की स्वीकृति हुई । मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभवपूर्ण समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद के रूप में विकल्प प्रकट हुआ ।

5. आदर्शवादी शास्त्रों के अनुसार- रहस्य मूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन ज्ञान तथा परम्परा के अनुसार- ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय

विकल्प के अनुसार - ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोध गम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रुप में स्पष्ट हुआ.

6. अस्थिरता, अनिश्चियता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केंद्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव

निर्मित करने की बात कही गयी है। इसके विकल्प में सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित सम्पूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

7. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुयें व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र सूत्र है।

सत्यापन

8. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबंधित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रुप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना-आराधना-अर्चना-स्तवन कार्य सम्पन्न होता रहा।

9. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवा भावी तथा श्रम शील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

10. प्रथम प्रश्न उभरा कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्ति मिथ्या कैसे ?

दूसरा प्रश्न -

ब्रह्म ही बंधन एवं मोक्ष का कारण कैसे ?

तीसरा प्रश्न -

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण ?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्‌गाता प्रमाण ?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

चौथा प्रश्न -

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय-चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

वोट-नोट (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा ?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य, एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और प्रक्रिया होना

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट नोट का गठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र है ? समानता व धर्म निरपेक्षता ?

11. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्मानीय ऋषि महर्षियों के सुझाव से -

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।

सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आई।

(4) सन् 1970 में समाधि सम्पन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह से अट्ठारह घंटे तक होती रही।

समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारी। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम सम्पन्न होने की क्रिया में भी 12 घण्टे से 18 घण्टे लगते रहे। फलस्वरुप संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व के रूप में मुझे अनुभव हुआ। जिसका वाङ्मय "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र के रुप में प्रस्तुत हुआ।

12. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड़ चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रुप में भूखे अजीर्ण व परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त गठनपूर्ण परमाणुओं के रूप में होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई-जीवन रुप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही सम्पूर्ण रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया।

13. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण

वन-वनस्पतियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मनुष्य शरीर का भी रचना सम्पन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

14. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में से के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

15. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही :-

(i) अस्तित्व में चार अवस्थाएँ

- पदार्थ अवस्था
- प्राण अवस्था
- जीव अवस्था
- ज्ञान अवस्था और

(ii) अस्तित्व में चार पद

- प्राणपद
- भ्रांति पद
- देव पद
- दिव्य पद

(iii) और

- विकास क्रम, विकास
- जागृति क्रम, जागृति है।

जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया।

इसे मैं सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो
धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।

- ए. नागराज

विकल्प का स्वरुप कार्य-व्यवहार रुप में

16. विकास क्रम में पदार्थ अवस्था एवं प्राण अवस्था है।

पदार्थावस्था :- धरती में संपूर्ण प्रकार के खनिजों से सम्पन्न होने के उपरांत।

प्राणावस्था :- सभी प्रकार के वन बड़े छोटे जंगल अनेक प्रकार के वनस्पतियों से सम्पन्न होना पाया जाता है। वन खनिजों के संतुलन में मौसम संतुलित रहना, यह भी समझ में आया।

साथ में यह भी समझ में आया कि मानव जागृति क्रम में जीव चेतनावश जीता हुआ समुदाय परंपराओं में मानव ही पशु मानव, राक्षस मानव के रुप में छल, कपट, दंभ, पाखण्ड, द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, साम, दाम, दण्ड, भेद रुपी कुचक्रवश सम्पूर्ण प्रकार के अपराध करना वैध मानकर जीना होता रहा जिससे धरती बीमार हो गई। खनिज कोयला, खनिज तेल और विकिरणीय धातुओं को धरती में से अपहरण करना धरती के साथ अपराध स्पष्ट है। इस क्रम में धरती बीमार हो गयी और

मानव के रहने लायक बचेगी कि नहीं यह प्रश्नचिन्ह लग गया है। इसके विकल्प में प्रवाह बल से ऊर्जा प्राप्त करने का सुझाव है। सौर ऊर्जा संबंधी उपकरणों को सस्ता बनाने के लिए, हवा तरंग को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए सुझाव है। यह राष्ट्रीय योजना के अर्न्तगत सोचने के लिए मुद्दा सुझाया गया।

17. जीव चेतना का प्रमाण धरती पर सभी संविधानों में गलती को गलती से रोकना, अपराध को अपराध से रोकना, युद्ध को युद्ध से रोकना के स्वरुप में देखने को मिला। इसे वैध माना।

- शिक्षा में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्मादी कार्य व्यवहार के लिए प्रोत्साहन देना।
- सभी प्रकार के प्रचार माध्यम भय और प्रलोभन के अर्थ में कार्यरत है यही मानव जाति की हैसियत है ऐसा मुझे समझ में आया।

18. उक्त कारणों से उनमें विकल्प प्रस्तुत करने की स्वीकृति हुई जो :-

सहअस्तित्ववादी विधि से आवर्तनशील अर्थशास्त्र, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र प्रस्तुत है।

जिसमें जीवनमूल्य - सुख-शांति-संतोष-आनन्द, मानव लक्ष्य रुपी समाधान-समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व सहज परंपरा में दस सोपानीय व्यवस्था विधि से सफल होने का संभावना प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है।

19. मानवीय मूल्य = धीरता, वीरता, उदारता, दया कृपा करुणा एवं मानव लक्ष्य - समाधान समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास चारों अवस्थाओं के साथ) वर्तमान होना प्रस्तावित है।

मानव संस्कृति, सभ्यता विधि, व्यवस्था सहज प्रमाण वर्तमान

होना प्रस्तावित है यही सहअस्तित्व है।

स्थापित मूल्य - परस्पर संबंधों की पहचान, संबंधों में मूल्यों का निर्वाह होना ही संस्कृति नित्य उत्सव सहज वैभव अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है।

शिष्ट मूल्यों के साथ वस्तुओं का आदान, प्रदान, अर्पण, समर्पण क्रिया कलाप रुप में नित्य उत्सव होना ही मानव चेतना सहज वैभव है। यह भी प्रस्तावित है।

मानव चेतना ही व्यवहार में मानवत्व है। आचरण में नियम है।

20. मानवत्व समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रुप में प्रमाण वर्तमान उत्सव है।

मानव चेतना सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्मत सोच विचार योजना कार्ययोजना व्यवहार फल परिणाम विज्ञान विवेक ज्ञान सम्मत होना ही नित्य 'समाधान' उत्सव यही मानव चेतना सहज वैभव है। मानव चेतना सहज वैभव ही मानवत्व है।

ज्ञान - सहअस्तित्व रूपी
- अस्तित्व दर्शन ज्ञान
- जीवन ज्ञान
- मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान

विवेक -
- जीवन सहज अमरत्व
- शरीर सहज नश्वरत्व
- व्यवहार सहज नियम

मानवीयतापूर्ण आचरण-
- स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार
- संबंध मूल्य मूल्यांकन उभय तृप्ति

- तन मन धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा

विज्ञान-
- काल क्रिया निर्णयवादी ज्ञान
- क्रिया की अवधि = काल
- क्रिया नित्य वर्तमान

सहअस्तित्व में सम्पूर्ण प्रकृति क्रिया स्वरुप में वर्तमान

क्रिया - श्रम गति परिणाम

परिणाम का अमरत्व - गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई जीवन

श्रम का विश्राम - मानव चेतना सम्पन्न परंपरा अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या और सार्वभौम व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या = अभ्युदय

ऐषणा प्रवृत्ति = पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा।

गति का गंतव्य - देव चेतना, दिव्य चेतना सहज वैभव रुप में उपकार प्रवृत्ति सर्वशुभ रुप में।

यह सब अध्ययनगम्य एवं जीना मानव में, से, के लिए।

प्रयोजन संभावना

21. धरती पर 700 करोड़ मानव अपराध कार्य प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने के लिए हर नरनारी का समझदार होना।

समझदारी से समाधान-सहज प्रमाण वर्तमान होना।

समाधान सम्पन्न हर परिवार में श्रम नियोजन पूर्वक समृद्धि

प्रमाणित होना, समाधान समृद्धि सम्पन्न हर परिवार में उपकार कार्य प्रवृत्तियों का प्रमाणित होना समीचीन है।

22. चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार सहित तकनीकी शिक्षण विधि से ही हर परिवार अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या तथा सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रुप में जीना ही समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व सहज परंपरा वैभवित होना यही अपराध मुक्त परम्परा होना समीचीन है।

हर नर नारी स्वयं में नियम नियंत्रण संतुलन न्याय धर्म सत्यसहज प्रमाणरुप में वर्तमान वैभव होना आवश्यक है।

23. चेतना विकास मूल्य शिक्षा रुप में अध्ययन के लिए अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन ही मध्यस्थ दर्शन चार भागों में -

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मानव कर्म दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन
4. मानव अनुभव दर्शन

24. दर्शनों पर आधारित विचार-वाद तीन भागों में -

1. समाधानात्मक भौतिकवाद
2. व्यवहारात्मक जनवाद
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

25. दर्शन-वाद के आधार पर शास्त्र तीन भागों में -

1. आवर्तनशील अर्थशास्त्र
2. व्यवहारवादी समाजशास्त्र

3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र

26. चिंतन - दर्शन-वाद-शास्त्र के आधार पर
जीवन विद्या प्रबोधन प्रणाली स्पष्ट है।
मानवीय आचार संहिता रुपी
'संविधान व्यवस्था' (प्रकाशन प्रक्रिया में)
अध्ययन के लिए प्रावधानित है, प्रस्तुत है।

27. इसी के साथ 'परिभाषा संहिता' प्रस्तुत करने की योजना है।

व्यक्तव्य

विकल्प के नाम से 27 मुद्दे के रुप में जो सूचना प्रस्तुत किया गया है इसके मूल अभिप्राय में अपना-पराया की दीवार से मुक्त, द्वेष मुक्त, अपराध मुक्त विधि से मानव चेतना पूर्वक समाधान समृद्धि सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रुप में जीना यह मानव परंपरा के लिए आवश्यकता बन चुकी है। यदि मानव को इस धरती पर परंपरा रुप में रहना है। अस्तु, सकारात्मक भाग में निर्णय लेने की स्थिति में इन सूचनाओं के आधार पर कितने भी सकारात्मक उद्देश्य से प्रश्न हो सकते हैं। उन सबका उत्तर मेरे पास सुरक्षित है जो चाहे वे इसे पा सकते हैं।

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद
दिव्य पथ संस्थान
भजनाश्रम, अमरकंटक,
जिला-शहडोल (म.प्र.)

विकल्प में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

अ -(अ) (आ)

1. अस्तित्व :- होना, निरंतर होना
2. अविभाज्य :- व्यापक वस्तु में एक-एक वस्तुओं का निरंतर क्रियाशीलता, निरंतर वर्तमान रहना।
3. आश्रम :- श्रमपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना। प्रयत्नपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना।
4. अनन्त :- जो गणितीय विधि से गणना समझ में नहीं आया - होने की संभावना रहे। कल्पना में हो समझ में नहीं आया हो - ज्ञात होने की संभावना हो।
5. अध्ययन :- अनुभव सहज रौशनी में स्मरण पूर्वक किया गया क्रिया कलाप एवं प्रयास
6. अखण्ड समाज :- मानव जाति, धर्म, राज्य व्यवस्था में एक रुपता संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में एकरुपता सहज वर्तमान परंपरा।
7. अध्ययनगम्य :- अध्ययनपूर्वक अस्तित्व सहज वस्तु समझ में आना
8. अजीर्ण परमाणु :- परमाणु के तृप्त होने में जितने अंशों की आवश्यकता सुनिश्चित रहती है उससे अधिक अंशों का गठन होना विकिरणीयता प्रभाव को प्रसारित करते रहने और अपने से कुछ अंशों को विसर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहना।

9. अणु :- जड़ परमाणुओं का संगठित रुप, एक से अधिक परमाणुओं का संयुक्त क्रिया-कलाप

10. अपराध :- पर-धन, पर-नारी, पर-पुरुष, पर-पीड़ाकारी कार्य व्यवहार एवं संग्रह सुविधा को आजीविका मान लिया हुआ पशु मानव, राक्षस मानव।

11. आवर्तनशीलता :- हर उत्पादन के लिए स्त्रोत बनाये रखते हुए उत्पादनपूर्वक समृद्ध होना

12. अभय :- वर्तमान में विश्वास-अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या प्रमाण।

13. अर्पण:- कुछ देकर लेने की विधि से अर्पण। अपेक्षा सहित नियोजन क्रिया।

14. अमरत्व :- परिणाम का अमरत्व (गठनपूर्णता)

15. अभ्युदय :- सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण वर्तमान

16. आशा :- सुख पूर्वक जीने की आशा

इ-ई

17. इच्छा :- दर्शन एवं उसके प्रगटन की संयुक्त चिंतन क्रिया का चित्रण।

18. ईमानदारी :- समझदारी को प्रमाणित करने के लिए निश्चित योजना तैयार करना।

उ ऊ ए

19. उभय तृप्ति :- कम से कम दो या दो से अधिक संबंधों में मूल्यों का निर्वाह

20. उपकार :- समझदार होना, समझदार समृद्धिपूर्वक जीने देना और जीना

21. उपासना :- उपायपूर्वक वांछित वस्तु का अध्ययन स्वीकृति प्राप्ति प्रमाण

22. ऐषणा :- ऐषणाओं (पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा) का प्रगटन.

क

23. कर्म :- उत्पादन कर्म (आहार-आवास-अलंकार) = सामान्याकांक्षा (दूरदर्शन - दूरश्रवण - दूरगमन) = महत्वाकांक्षा सम्बन्धी यन्त्र, उपकरण का निर्माण।

24. कार्ययोजना :- योजना को क्रियान्वयन करना

कार्य व्यवहार :- मानव के साथ व्यवहार जड़ प्रकृति के साथ उत्पादन के लिए कार्य

25. कर्माभ्यास :- प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य - कलामूल्य को स्थापित करने का क्रिया कलाप में पारंगत होना

26. कामोन्माद :- यौन विचार में लिप्त मानव

ख

27. खनिज :- ठोस धरती में से वांछित वस्तु को खोदकर निकलने वाली वस्तु

ग

28. गति :- स्थानांतरण परिवर्तन

च

29. चेतना विकास :- जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम

30. चैतन्य :- गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई, जीवन।

31. चिंतन :- इच्छाशक्ति में से के लिए परिमार्जन प्रगटन क्रिया

32. जीवन ज्ञान :- गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता को समझना समझाना,

33. जीवन वस्तु :- जीने की आशा विचार इच्छा ऋतंभरा प्रमाण प्रस्तुत होना

34. जड़ :- पदार्थ और प्राणावस्था सहज क्रिया कलाप जो जितना लंबा-चौड़ा-ऊँचा रहता है वह उतने ही विस्तार में क्रियाशील रहना।

35. जगत :- भौतिक रासायनिक संसार

36. जीवावस्था :- जीने की आशा सहित अनेक वंश के रुप में वर्तमान

37. जागृति सहज मानव परंपरा :- समझदारी सहज सर्वतोमुखी समाधान के रुप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा - संस्कार, न्याय सुरक्षा विधि से प्रमाण।

38. जीवन मूल्य :- सुख, शांति, संतोष, आनंद

39. जिम्मेदारी :- कार्य व्यवहार योजना में परिणित करना

द

40. देव पद चक्र :- मानव चेतना सहज प्रवृत्ति में गुणात्मक विकास रुप में देव चेतना में ओर, और देव चेतना ह्रास होकर मानव चेतना में परिवर्तित होना।

41. दिव्य पद :- दिव्य चेतना नित्य वर्तमान आचरणपूर्णता उपकार प्रवृत्ति सहज प्रमाण

42. दर्शन :- स्थिति गति (रुप गुण स्वभाव धर्म समेत स्वीकृति) मूल्यांकन वर्तमान प्रमाण

43. दृश्य :- व्यापक वस्तु में से के लिए अविभाज्य रुप में होना

44. दृष्टा :- दृश्य स्थिति, वस्तु स्थिति, वस्तुगत सत्य को समझना समझाना.

45. दर्शन ज्ञान :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज समझ स्वीकृति प्रमाण

46. दीक्षा :- समझने समझाने के लिए निश्चित विधि स्वीकृति और निष्ठा

ध

47. धरती :- पदार्थावस्था के अणुओं से रचित वृहत् रचना जिस पर प्राण, जीव व ज्ञानावस्था प्रकट हो।

न

48. नश्वरत्व :- परिणाम परिवर्तनशीलता सहज परंपरा।

49. नित्य वैभव :- हर अवस्था और पद अपने यथास्थिति में वैभव एवं नित्य वर्तमान

50. नियति क्रम :- पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था सहज प्रगटन

51. नियति विधि :- पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञानावस्था का निश्चित आचरण

52. नित्य :- निरन्तर सदा-सदा

53. नियन्त्रण :- त्व सहित व्यवस्था - समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

54. नियम :- आचरण

55. न्याय :- संबंध-मूल्य-मूल्यांकन-उभयतृप्ति व निरन्तरता

प

56. परिणाम :- परमाणु में परिणाम परमाणु में अंश संख्या घटना-बढ़ना

57. प्रमाण :- प्रकट होते रहना। प्रकटन की निरन्तरता

58. प्रकृत्ति :- पहले से ही होने में प्रमाण और होने का सूत्र व्याख्या सम्पन्नता।

59. परमाणु :- ज्यादा कम से मुक्त त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी - उपयोगिता-पूरकता सहज मूल ईकाई - जड़ प्रकृति के रुप में।

60. प्राणकोश :- प्राण सूत्र - रचनातत्व - पुष्टितत्व का संयुक्त रुप में रचित रचना और श्वसन-प्रश्वसन सहित रचना विधि सहज रचना प्रवृत्ति सम्पन्न इकाई।

61. पदार्थावस्था :- पद भेद से अर्थ भेद प्रगट करने वाला

62. प्राणपद चक्र :- पदार्थावस्था से प्राणावस्था
प्राणावस्था से पदार्थावस्था में परिणितीयाँ

63. प्रलोभन :- शब्द-स्पर्श-रुप-रस-गंध इंद्रियों के अनुकूल के प्रति विवश होना

फ

64. फल :- योजना के क्रियान्वयन से जो उपलब्धियाँ स्पष्ट हुई

65. प्रणेता :- प्रेरणा पाने का स्रोत। परिपूर्ण रुप में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रुप में स्पष्ट करना।

ब

66. ब्रह्म :- व्यापक वस्तु का नाम

67. बंधन :- भ्रम, अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोष

भ

68. भागीदारी :- फल-परिणाम को स्वीकारने के लिए किया गया क्रियाकलाप।

69. भय :- संबंधों में विश्वास नहीं हो पाना और प्रमाणित नहीं हो पाना। अपेक्षा बना रहना।

70. भोगोन्माद :- शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध इंद्रियों में अनुकूलता करने में प्रवृत्ति और विवशता

71. भ्रांतिपद :- जीवों के समान जीते हुए मानव का मानव पद में होना एवं मानव पद से पुनः जीव चेतना

पद में आने का चक्र जीवावस्था से भ्रांत मानव रुप में होना और भ्रांत मानव जीव रुप में होने की आवर्तन क्रिया

72. भूखा परमाणु :- तृप्त परमाणु में जितने संख्यात्मक अंशों का रहना है उससे कम रहना।

73. भौतिक वस्तु :- परमाणु अणु रचित स्वरुप में वर्तमान

म

74. मानव :- मनाकार को साकार करने वाला मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला

75. मानवीयतापूर्ण आचरण :- मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज प्रमाण परंपरा

76. मध्यस्थ दर्शन :- होने में, से, के लिए निरंतरता सहज सूत्र व्याख्या।

77. मोक्ष :- भ्रम मुक्ति, जागृति

78. मानव मूल्य :- धीरता दया
वीरता कृपा
उदारता करुणा

79. मूल्य शिक्षा :- जीवन मूल्य - मानवमूल्य - स्थापित मूल्य-शिष्ट मूल्य उपयोगिता मूल्य-कला मूल्यों का कर्माभ्यास व्यवहाराभ्यास कराने वाला शिक्षा कार्यक्रम।

य, र

80. योजना :- योग संयोग से वांछित उपलब्धि के लिए निर्णय करना

81. रहस्य :- होने का एहसास होते हुए समझ ना हो पाना, स्पष्ट ना हो पाना

82. रासायनिक वस्तु :- यौगिक क्रियापूर्वक भौतिक आचरण से भिन्न आचरण में वर्तमान होना

(जैसा पानी :- एक जलाने वाला एक जलने वाला योग होने से प्यास बुझाने वाली वस्तु)

83. राष्ट्र :- धरती सहज अखण्ड सूत्र व्याख्या

84. राष्ट्रीयता :- अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या

85. राष्ट्रीय चरित्र :- धरती पर अखण्ड समाज रुप में समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व प्रमाण परंपरा रुप में वैभवित होना

86. रचना :- धरती जैसा बड़े रचना में ही संपूर्ण प्रकार से हरियाली जंगल झाड़ी पौधे वनस्पतियाँ, औषधियाँ बीजवृक्ष विधि से परंपरा रुप में सम्पन्न क्रियाकलाप और जीव व मानव रचनाएँ।

87. रसायन तंत्र :- धरती पर पानी संयोग होने से पानी में क्षार और अम्ल का संयोग से पुष्टि तत्व रचना तत्व प्रगट। इसी से उपजा हुआ अनेक रसायन तत्व का संयुक्त कार्यकलाप।

88. राक्षस मानव :- जीव चेतना क्रम में क्रूरता पूर्वक जीने वाला

ल

89. लाभोन्माद :- कम देकर ज्यादा लेने का दुष्ट प्रवृत्ति और कार्य

व

90. विचार :- क्रियान्वयन में तर्क संगत निश्चयनों की स्वीकृति

91. वाद :- विश्लेषण कारण गुण सम्मत युक्त गणितात्मक विधि से प्रमाण और वर्तमान

92. वर्ण :- जो जिस अवस्था की चेतना विधि से सम्पन्न है वही उसका वर्ण (जीव चेतना - मानव चेतना-देव चेतना-दिव्य चेतना)

93. विकल्प :- परंपरा सहज गति में प्राप्त समस्याओं का समाधान

94. व्यापक :- सर्वत्र विद्यमान - जड़ चैतन्य प्रकृत्ति में से के लिए प्राप्त

95. वर्तमान :- वर्तते रहना। स्थिति गति रुप में होते रहना।

96. व्यवहाराभ्यास :- संबंधों के साथ समाधान, समृद्धि पूर्वक मूल्यों चरित्र नैतिकता सहित जीने का अभ्यास

97. विद्वता :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज अनुभव प्रमाण। ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता वर्तमान प्रमाण।

98. वस्तु :- वास्तविकता प्रगट रहना (होना-होने की महिमा उपयोगिता-पूरकता सहज प्रमाण)

99. व्यवहारवाद :- संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, स्वधन स्वनारी-स्वपुरूष दयापूर्ण कार्य व्यवहार

तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा संबंधी तर्क प्रयोजन सहित क्रियान्वयन के लिए आवश्यक अध्ययन और वार्तालाप

100. वस्तु स्थिति सत्य :- देश काल दिशा

वस्तुगत सत्य :- रुप गुण स्वभाव धर्म

स

101. संबंध :- (i) शरीर संबंध (ii) मानव संबंध (iii) शिक्षा संबंध (iv) व्यवस्था संबंध (v) उत्पादन संबंध (vi) विनिमय संबंध (vii) नैसर्गिक संबंध

102. स्थिति सत्य :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति

103. समझदारी :- ज्ञान विवेक विज्ञान

104. समर्पण :- लेने की इच्छा से मुक्त प्रदान क्रिया

105. सभ्यता :- विधि व्यवस्था में भागीदारी, व्यवस्था के अर्थ में सूत्र व्याख्या

106. संस्कृति :- पूर्णता के अर्थ में किया गया क्रिया कलाप, कार्य व्यवहार अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन

107. समृद्धि :- परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन

108. समाधान :- समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी समझदारी के अनुरूप फल परिणाम होना।

109. स्थापित मूल्य :- 1. विश्वास 6. श्रद्धा

2. सम्मान
7. ममता
3. स्नेह
8. वात्सल्य
4. कृतज्ञता
9. प्रेम
5. गौरव

110. संपृक्त :- डूबा - भीगा - घिरा। पूर्णता के अर्थ में, संपूर्णता के अर्थ में

पूर्णता - गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता आचरण पूर्णता, सम्पूर्णता = इकाई + वातावरण

111. सार्वभौम व्याख्या :- दस सोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था जिसमें बिना धन व्यय के जनप्रतिनिधि सुलभ होना। सभी प्रतिनिधि समझदारी समृद्धि से सम्पन्न होना। समझदारी सम्पन्न समृद्ध सहित परिवार का प्रतिनिधि होना एवं मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा संस्कार, उत्पादन कार्य संस्कार, विनिमय कार्य संस्कार, स्वास्थ्य संयम संस्कार, कार्य में भागीदारी सहज परिवार प्रतिनिधि निर्वाचित परंपरा रुप में वर्तमान होना।

112. सहअस्तित्ववाद :- सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति सहज नित्य प्रभाव गतिविधि वर्तमान

113. सत्यापन :- स्वयं में से के लिए यथास्थिति सहज वर्णन

114. संयम :- समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी भागीदारी का प्रमाण परंपरा

115. समाधि :- आशा विचार इच्छा का चुप होना एवं स्व होने का दृष्टा होना।

116. साधना :- साध्य के लिए प्रयास सहज क्रिया कलाप

117. सत्य :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति - व्यापक वस्तु में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति स्थिति सत्य - वस्तुस्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य

118. संतुलन :- पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था में परस्पर पूरकता - उपयोगिता

119. सह-अस्तित्व :- सत्ता में संपृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति

120. सह-अस्तित्व में विकास क्रम :- परमाणु में अनेक अंशों का प्रस्थापन विस्थापन होना।

121. सह अस्तित्व में विकास :- परमाणु में गठनपूर्णता

122. सहअस्तित्व में जागृतिक्रम :- शरीर व जीवन सहित जीता हुआ मानव

123. सहअस्तित्व में जागृति :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति में ज्ञानावस्था में गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहज प्रमाण

124. सहअस्तित्व में जागृति की निरंतरता :-

- मानव परंपरा क्रियापूर्णता - आचरणपूर्णता सहज निरंतरता
- समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व प्रमाण उसकी निरंतरता
- अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या उसकी निरंतरता

125. शास्त्र :- कायिक - मानसिक -वाचिक, कृत-कारित-अनुमोदित भेदों में एक सूत्रात्मकता (एक से अधिक कड़ियाँ)

126. शिक्षा :- ज्ञान, विवेक विज्ञान सम्पन्नता

127. शिक्षण :- तकनीक, उत्पादन कार्य के लिए आवश्यकीय कारीगरी का कर्माभ्यास।

128. श्रम :- शरीर और जीवन के संयुक्त रुप में जीता हुआ मानव कुशलता निपुणता पाण्डित्य पूर्वक उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य को प्राकृतिक ऐश्वर्य पर स्थापित करना।

ज्ञ

129. ज्ञान :- अस्तित्व जीवन व आचरण ज्ञान

130. ज्ञाता :- समझ में आना, प्रमाणित होना

131. ज्ञानावस्था :- जीव चेतना से श्रेष्ठ मानव चेतना
मानव चेतना से श्रेष्ठतर देव चेतना
देव चेतना से श्रेष्ठतम दिव्य चेतना सहज प्राण परंपरा है।

त

132. तृप्त परमाणु :- (गठनपूर्ण परमाणु) :- परिणाम का अमरत्व सम्पन्न क्रियापूर्णता-आचरणपूर्णता के लिए तत्पर होने वाला परमाणु

अनिश्चयता, अस्थिरता मूलक भौतिकवाद तथा रहस्य मूलक आदर्शवाद के विकल्प को मानव केन्द्रित चिन्तन मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद के रूप में आदरणीय ए. नागराज (बाबाजी) ने प्रस्तुत किया है । इस दर्शन में मानव जाति के समस्त प्रश्नों के उत्तर, सभी समस्याओं का समाधान तथा मानव के सुख, समृद्धि पूर्वक जीने की परंपरा प्रमाण होने की व्यवस्था है । इस दर्शन को समझ कर जीने के क्रम में जिन्होंने भी प्रयास किये हैं उनमें उत्साहजनक परिणाम है। स्वयं में तनाव से मुक्ति और परिवारों में संगीतमयता का वातावरण बना है। स्कूलों तथा तकनीकी विद्यालयों में भी इस दर्शन के आधार पर शिविर आयोजित किये गये हैं। विद्यार्थियों में स्वयं से लेकर प्रकृति तक अपनी जिम्मेदारी के प्रति गंभीरता पैदा हुई है । इस दर्शन को हम लोगों ने समझा है जी रहे हैं तथा समझाने के लिए संकल्पित और प्रयासरत हैं।

डॉ. रणसिंह आर्य
पश्चिमी उत्तर प्रदेश
09412218178

अभ्युदय संस्थान अछौटी
(छत्तीसगढ़)
9300205129
9301700400

डॉ. राजीव सांगल
डायरेक्टर I.I.I.T.
हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
09848152825

माननीय शिक्षा शोध संस्थान
कानपुर (उ.प्र.)
0512-2581669

"सिद्ध"
मसूरी (उत्तरांचल)
0135-2631304
9358119414
9219569414

A27. विकल्प प्रथम संस -2006_c

ए नागराज, प्रणेता एवं लेखक मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

www.madhyasth.org